International Journal of New Media Studies *ISSN: 2394-4331*
Vol. 4 Issue 2, July-Dec., 2017

जायसी के महाकाव्य 'पद्मावत' के खंडों का संक्षिप्त विश्लेषण

सुमन देवी

सार

सूफी कवि परम्परा के सर्वाधिक परिपक्व कवि ये ही थे। भगवान् ने इनके बाह्म रूप के निर्माण में जितनी उपेक्षा दिखलाई उतनी ही आन्तरिक रूप–निर्माण में कला का परिचय दिया। जन्म समय अनिष्चित है, पर मृत्यु तिथि 1542 ई. बताई जाती है। इन्होंने अपने दो गुरूओं का उल्लेख किया है– सैयद अषरफ एवं षेख मुहीउद्दीन। इनकी रचनाएँ तीन हैं– पद्मावत, अखरावट एवे आखिरी कलाम। इनके यषः प्रसाद का स्तंभ 'पद्मावत' ही है। इसमें इतिहास के साथ कल्पना का मंजूल समन्वय है। कहानी का पूर्वार्द्ध कल्पित एवं उतरार्द्ध ऐतिहासिक है। पद्मावत् में कथा का आधार चितौड़ की महारानी पद्मिनी या पद्मावती है। भारतीय प्रबंध काव्य आदर्ष परिणामों द्वारा सत् एवं असत् की षिक्षा देता है, पर 'पद्मावत' के कथानक का लक्ष्य घटनाओं को आदर्ष परिणाम पर पहुँवरले कर नहीं है।

प्रबंध काव्य मानव जीवन का एक पूर्ण चित्र है। उसमें घटनाओं की सश्रृंखल कड़ी तो है ही, रसमयता का होना भी नितांत आवष्यक ह। अर्थात् किसी प्रबध की परीक्षा के लिए उसे दो भागों में बांट लेना चाहिए– इतिवृत्तात्मक एवं रसात्मक। पहला अंष जिज्ञासा को और दूसरा रिसिसा को तुष्ट करता है। इतिवृत की दृष्टि से देखें, तो रत्नसेन एवं पद्मवती की आधिकारिक कथा के साथ तोता–क्रेता – ब्राह्मण–वतांत राघव चेतन का हाल आदि प्रांसगिक कथाएँ भी है, जो परस्पर प्रबंध के 'कार्य'– पद्मावती का सती होना से प्रमुख रूप से सम्बन्ध है। इस महाकाव्य को 57 खंडों में बाँटा गया है जो क्रमबद्ध तरीके से समावेषित है।

भूमिका

पद्मावत 57 खण्डों में विभक्त रचना है जिसके रचनाकार प्रसिद्ध कवि मलिक मुहम्मद जायसी हैं। कथा के सभी खंडों का **सारांश इस प्रकार है**–

1. स्तुति खंड :– प्रथम खंड का आरम्भ जायसी ने जगत के रचनाकार 'ईष्वर' की स्तुति से किया है; इसके बाद उन्होंने पैगम्बर मुहम्मद और उनके चार मित्रों (खलीफाओं) का वर्णन किया है ; अंतत : कवि ने अपना जीवन –वृत बताते हुए अपने चार मित्रों का वर्णन किया है; तत्पष्चात् उन्होंने तत्कालीन षासक षेरषाह के रूप, गुण आदि का वर्णन करते हुए अपनी गुरू–परम्परा का चित्रण किया है। अंततः कवि ने अपना जीवन–वृत बताते हुए अपने चार मित्रों का उल्लेख किया है और कृति के रचनास्थल और काल के साथ–साथ पद्मावत की कथा का सारांष भी प्रस्तुत किया है ।

2. सिंहलद्वीप–वर्णन खंड :– द्वितीय खंड में कवि ने सिंहद्वीप (पद्मावती की जन्मस्थली) को सातों द्वीपों में सर्वश्रेष्ठ बताते हुए वहाँ की नारियों का वर्णन पद्मिनी जाति की नारियों क रूप में किया है। सिंहलद्वीप का 'ाासक गन्धर्वसेन है जिसका वैभव स्वर्ग के समान बताया गया है।

3. जन्म खंड – इस खंड में गन्धर्वसेन की रानी चम्पावती के गर्भ से पद्मावती के जन्म लेने की कथा है। इस सुन्दरी कन्या का नाम पद्मावती रखाा जाता है। फिर बताया गया है कि बारह वर्षीया पद्मावती के साथ एक चतुर तोता रहता था, जिसका नाम हीरामन था। वह तोते के साथ धर्म तथा जीवन के प्रष्नों पर चर्चा करती थी। पद्मावती युवती हो चुकी थी किंतु गंधर्वसेन ने उसका विवाह नहीं किया क्योंकि वह अपने बराबर किसी को नहीं मानता था । पद्मावती विवाह न होने की पीड़ा हीरामन से कहती थी जिसका राजा को पता चल गया। उसने यह समझा कि होरामन तोता पद्मावती को इस प्रकार की अनुचित बातें सिखाता रहता है। इसलिए उसने हीरामन तोते को मारने की आज्ञा दी। पद्मावती द्वारा छिपा लेने के कारण हीरामन बच तो गया किंतु वह बेचैनी महसूस करने के कारण वहाँ से चले जाने की

इच्छा व्यक्त करने लगा। पद्मावती के आग्रह के कारण वह वहाँ से जा न सका।

4. मानसरोदक खंड :– एक बार पूर्णमासी के अवसर पर पद्मावती अपनी समवयस्का सहेलियों के साथ मानसरोवर में स्नान करने गई। पद्मावती के अनिंद्य सौंदर्य को देखकर सरोवर भी मोहित हो गया। पद्मावती को साक्षी बनाकर सखियाँ जल मे एक खेल खेलने लगीं जिसकी षर्त यह थी कि जो खेल में हार जाएगी , वह अपना हार देगी। एक सखी उस खेल में प्रवीण न होने के कारण अपना हार खो बैठी और राने लगी । सब सहेलियों ने डुबकियाँ लगाकर हार को खोजने का प्रयास किया। अंततः पद्मावती के चरण–स्पर्ष होते ही स्वयं को धन्य मानते हुए सरोवर ने हार ऊपर तैरा दिया जिसे लेकर सभी प्रसन्न हो गई ।

5. सुआ–खंड :– पद्मावती अपनी सखियों के साथ उछल कूद में लगी हुई थी कि मौके का फायदा उठाकर हीरामन तोता उड़ गया। वन के पक्षियों ने हीरामन का स्वागत – सत्कार किया । कुद छिनों तक तो वह वन– पक्षियों के साथ आनन्दपूर्वक रहा, किन्तु बाद में एक बहेलिए द्वारा पकड़ लिया गया।

6. रत्नसेन – जन्म खंडः– प्रस्तुत खंड में रचना के नायक रत्नसेन का चितौडगढ़ के चित्रसेन नामक राजा के यहाँ जन्म लेना दिखाया गया है। पंडितों और ज्योतिषियों ने उसके भविष्य के संबंध में बताया कि रत्नसेन योगी बनकर सिंहलद्वीप जाएगा और वहाँ से पद्मावती को विवाह करके चितौड़ लाएगा। यह ऐष्वर्य मे राजा भोज और बल में विक्रमादित्य के समकक्ष होगा ।

7. बनिजारा खंड – इस खंड में चितौडगढ़ का एक बनजारा व्यापार क लिए सिंहलद्वीप जाते हुए दिखाया गया है। उसके साथ एक गरीब ब्राह्मण ने हीरामन को ही खरीद लिया। इस समय तक रत्नसेन चितौड़ का राजा बन चुका था। जब उसे पता लगा कि सिंहलद्वीप से आए व्यापारी कई बहुमूल्य वस्तुओं के साथ एक गुणी तोता भी लाए हैं तो उसने तोते को अपवने यहाँ मंगवा लिया। हीरामन से परिचय पूछने पर उसने उत्तर दिया कि मैं वेदज्ञ पंडित हूँ , तुम्हें पद्मावती से मिलवा दूंगा। यह सुनकर राजा ने हीरामन को खरीद लिया।

8. नागमती –सुआ–खंड :– हीरामन को राजमहल मे रहते हुए कुछ दिन हुए थे कि एक दिन राजा षिकार खेलेन गया। रत्नसेन की पत्नी नागमती अत्यंत रूपवती थी। उसने श्रृंगार किया और अपने अप्रतिम सौंदर्य को दर्पण में देखकर उस पर गर्व करते हुए हीरामन से बोली कि तुमने सिंहलद्वीप आदि स्थानों की स्त्रियाँ देखी हैं, तुम ही बताओं कि क्या सिंहलद्वीप में कोई नारी मुझसे भी सुन्दर है। पद्मावती के सौंदर्य को याद करते हुए हीरामन ने सोचा कि जिस सरोवर में हंस नहीं आता, वहाँ लोग बगुले को ही हंस समझते हैं। उसने उत्तर दिया कि वैसे तो उसी स्त्री को सुन्दर समझना चाहिए जिसे उसका प्रिय प्रेम करता हो, किन्तु जहाँ तक षारीरिक सुन्दरता का प्रष्न है, तुम सिंहलद्वीप की नारियों की बराबरी नहीं कर सकतीं। नागमती को चिंता हुई कि यंदि यह तोते ने ये बातें मेरे पति से कह दीं तो वे मुझे छोड़कर सिंहलद्वीप चले जाएंगे । अतः उसने दासी को उस तोते को मारने का आदेष दे दिया। दासी को राजा का भय था, अंतः उसने तोते को मारने के बजाय छिपा दिया। राजा के आने पर तोते की खोज हुई। नागमती ने तोते को मारने का कारण अवसर पाकर दासी ने तोते को लाकर राजा को सौंप दिया।

9. राजा –सुआ– संवाद खंड :– रत्नसेन के पूछने पर हीरामन ने बता दिया कि में सिंहलद्वीप की राजकुमार पद्पावती को तोता हूँ। सिंहलद्वीप अपने आप मैं बहुत श्रेष्ठ है और पद्मावती का सौंदर्य तो अतुलनीय है। यह सुनकर राजा के हद्य में पद्मावती का सौंदर्य तो अतुलनीय है। यह सुनकर राजा के हदय में पद्मावती के प्रति प्रेम–भाव पैदा हो गया ओर तोते के मान करने पर भी प्रेम – मार्ग का अनुयायी बन गया।

10. नख–शिख खंड :– इस खंड मे हीरामन तोते द्वारा राजा रत्नसेन के समक्ष पद्मावती के नख–षिख श्रृंगार का वर्णन परंपरा के अनुसार कराया गया है।

11. प्रेम–खंड :–पद्मावती के नख–षिख–वर्णन को सुनकर रत्नसेन मूर्छित हो गया। होष आने पर

वह रोने लगा कि मैं तो अमरपुर में पहुँच गया था, अब पुनः कहाँ आ गया हूँ ? हीरामन तोते ने उसे समझाया की राज्य के वैभव–सुख को भोगने वाले तुम जैसे व्यक्ति प्रेम के कठिन मार्ग के यात्री नहीं बन सकते क्योंकि उसके लिए तो कठोर त्याग, पतिबद्धता व साधना अपेक्षित होती है। प्रेम–व्याकुल राजा के मन मे यह बात समा गई कि प्रेम –मार्ग पर चलने के लिए मुझे राजसी सुखों का त्याग कर देना चाहिए।

12. जोगी खण्ड :– पद्मावती की उपलब्धि के लिए रत्नसेन ने राज्य छोड़कर योगियों जैसा वेष धारण कर लिया और यात्रा की तैयारी षुरू कर दी। ज्योतिषियों ने उसे समझाया कि अभी यात्रा का षुभ मुहूर्त नहीं है किन्तु रत्नसेन ने यह कहकर उनकी बात काट दी कि प्रेम के मार्ग पर चलने वाला षुभ मुहूर्त नहीं है किन्तु रत्नसेन ने यह कहकर उनकी बात काट दी कि प्रेम के मार्ग पर चलने वाला षुभ मुहूर्त नही देखता। रत्नसेन की माता और पत्नी नागमती ने उसे रोकने की काफी कोषिष की किंतु उनका प्रयत्न विफल रहा। उसके साथ सोलह सौ अन्य युवक भी सिंहलद्वीपकी ओर चल दिए।

13. राजा–गणपति संवाद खंड :–एक महीने तक निरन्तर यात्रा करने के पष्चात् रत्नसेन समुद्र–तट पर पहुँच गया। राजा गणपति ने रत्नसेन के आने का समाचार सुना तो वह उससे मिलने गया और रत्नसेन का खूब स्वागत–सत्कार किया। रत्नसेन ने जब गणपति से समुद्र पार करने के लिए नावें मांगीं तो उसने रत्नसेन को समुद्र के मार्ग की कठिनाइयाँ बताते हुए सिंहलद्वीप न जाने का सझाव दिया। रत्नसेन का उत्तर था कि प्रेम – मार्ग का यात्री इस प्रकार के विघ्नों की चिन्ता नहीं किया करता ।

14. बोहित खंड :–राजा रत्नसेन को सिंहलद्वीप जाने के लिए दृढ़ देखकर गणपति ने नावें प्रदान कर दीं और रत्नसेन अपने साथी युवकों के साथ यात्रा पर चल पड़ा।

15. सात–समुद्र खंड :–राजा रत्नसेन प्रेम मार्ग पर दृढ़ था जिसके परिणामस्वरूप वह क्षार–समुद्र, क्षीर –समुद्र, उदंधि–समुद्र, सुरा–समुद्र और किलकिला– समुद्र को साहसपूर्वक पार करते हुए सातवें समुद्र मानसर में आ पहुँचा। यहाँ आकर रत्नसेन सहित सभी यात्रियों को असीम आनन्द अनुभव हुआ।

16. सिंहलद्वीप खंड :– सिंहलद्वीप पहुँच जाने पर वहाँ के सुन्दर वातावरण को देखकर राजा ने हीरामन से पूछा कि है गुरू सुग्गे! हम कौन से सुन्दर स्थान पर आ गए हैं ? इस पर हीरामन ने राजा को सिंहलद्वीप के विषय में बताया। उसने राजा को बताया कि माघ मास की पंचमी को पद्मावती षिव–मन्दिर में पूजा करने आएगी, तब तुम उसको देख सकते हो। राजा को षिव मन्दिर के समीप छोड़कर हीरामन पद्मावती के महल में चला गया।

17. मंडप गमन खंड :–रत्नसेन के हद्य में पद्मावती के लिए विरह–भाव प्रदीप्त हो उठा। वह साथी नवयुवका के साथ षिव–मंडप में पहुँचकर पूजा करने लगा। तब मन्दिर से धीमा स्वर सुनाई दिया कि मनुष्य प्रेम द्वारा ही बैकुठ था स्वर्ग को प्राप्त कर सकता है। उसके पष्चात् रत्नसेन वहीं बैठकर पद्मावती के नाम का बार–बार जाप करने लगा।

18. पद्मावती वियोग खंड :– रत्नसेन के प्रेम के प्रभावस्वरूप पद्मावती का हद्य विचलित होने लगा। उसे अज्ञात प्रेम के भाव से ही विरह की प्रगाढ़ अनुभूति होने लगा। उसे अज्ञात प्रेम के भाव से ही विरह की प्रगाढ़ अनुभूति होने लगी। यौवन के आगमन पर प्रियतम की प्राप्ति न होने से दुखी पद्मावती ने अपने मन की खिन्नता अपनी धाय को बतलाई। धाय ने उसे धैर्य रखने को कहा।

19. पद्मावती–सुआ भेंट खंड :–पद्मावती की विरहानुभूति की अवस्था को संतोष मिला। हीरामन ने उसको अब तक की पूरी कहानी सुनाई। यह सुनकर पद्मावती को पहले तो गर्व हुआ कि योगी उसके योग्य नहीं है किन्तु हीरामन के मुख से रत्नसेन की अत्यधिक प्रषंसा सुनकर उसका हदय पिघल गया। उसने हीरामन ने यह सूचना रत्नसेन को पहुँचा दी ।

17. वसंत खंड :–वंसत–पंचमी आने पर पद्मावती अपनी सखियों के साथ मंदिर आई और अपने वर के लिए मनौती करने लगी। सखियों ने उससे कह कि यहाँ योगियों का एक समूह ठहरा हुआ है। उनका गुरू बत्तीस लक्षणों से युक्त कोई राजकुमार प्रतीत होता है। पद्मावती वहाँ गई तो उसके अनिंद्य सौंदर्य की झलक पाकर रत्नसेन बेहोष हो गया। पद्मावती ने उसके माथे पर चंदन लगाया और फिर उसके हद्य पर चंदन से यह लिखकर लौट गई कि हे योगी! तुम भिक्षा लेना नहीं जानते। अब तुम्हे सातवें आकाष पर (महल के सातवें खंड पर)आना पड़ेगा। रात को पद्मावती ने स्वप्न देखा कि सूर्य और चन्द्रमा का मिलन हुआ है, जिसे उसकी सखियों ने एक षुभ संकेत बतलाया।

21. राजा रत्नसेन –सती खंड :–रत्नसेन जब होष मे आया तो उसे पद्मावती को न पाकर बड़ा दुःख हुआ और वह स्वयं को धिक्कारने लगा। उसने चिता में जलकर मरने का संकल्प किया क्योंकि उसने जिस पद्मावती को उपलब्धि के लिए योग धारण किया था, वह उसे प्राप्त नहीं हुई थी। भगवान हनुमान ने भगवान षिव को बताया कि आपके मंडप मे ंजाकर राजा आत्मदाह कर रहा है।

22. पार्वती–महेश खंड :–मंडप में रत्नसेन के जलने की बात सुनकर षिव पार्वती वहाँ उपस्थित हुए और उससे जलने का कारण पूछा। कारण ज्ञात होने पर पार्वती ने उसकी परीक्षा ली जिसमें रत्नसेन खरा उतरा। षिव ने राजा को आष्वासन देते हुए बताया कि सिंहलगढ़ उसी प्रकार टेढ़ा है जैसे तुम्हारा षरीर । यदि तुम साहसपूर्वक दुर्ग पर चढ़ने का प्रयास करोगे तो पद्मावती के पास पहुँच सकते हो। यह तभी हो सकता है जब तुम प्राणों का मोह त्यागकर इस दिषा में प्रयास करो।

23. राजा–गढ़–छेंका खंड :– रत्नसेन को षिवजी ने एक सिद्धि –गुटका भी प्रदान किया। रत्नसेन ने गणेष का स्मरण करके अपने चेलों के साथ सात गढ़ को घेर लिया। इससे कोहराम मच गया तथा इसकी सूचना गंधर्वसेन तक पहुँची। राजा ने दूत भेजकर योगियों के इस व्यवहार का कारण पूछा और कहा कि योगी यहाँ से लौट जाएँ। रत्नसेन ने उत्तर दिया कि मैं पद्मावती रूपी भिक्षा प्राप्त करने आया हूँ। यह सुनकर राजा क्रुद्ध तो बहुत हुआ किन्तु उसने योगियों को मरवाया नहीं क्योंकि उसके मंत्रियों का परामर्ष इसके विरूद्ध था। रत्नसेन ने अपनी वियोग–व्यथा एक पत्र मे ंलिखकर हीरामन के माध्यम से पद्मावती को भेजी। विरह से पीड़ित पद्मावती ने भी उत्तर में एक पत्र रत्नसेन को भेजा और बताया कि अब तो तुम मुझे जीवन की बाजी लगाकर ही प्राप्त कर सकते हो। पद्मावती का संदेष पाकर रत्नसेन को मानो पुनर्जीवन मिल गया। चारों ओर षोर मच गया कि गढ़ में चोर घुस आए है।

24. गन्धर्वसेन –मंत्री खंड :–राजा गंधर्वसेन ने अपने मंत्रियों से इस विषय मे ंचर्चा की कि इन योगियों को क्या दण्ड दिया जाना चाहिए ? अब यह निष्चय हुआ कि योगियों को चोरों की भाँति सूली का दण्ड (मृत्यु दण्ड) दिया जाए। सेना भेजकर योगियों को पकड़ लिया गया। योगियों ने अपनी गिरफतारी का विरोध नहीं किया क्योंकि वे प्रेममार्ग के पथिक थे। पद्मावती पहले ही वियोग में दुःखी थी। उसे रत्नसेन के बंधनग्रस्त होने का समाचार मिला तो वह और दुःखी हो गई।

25. रत्नसेन–सूली खंड :–योगियों को सूली के स्थान पर लाया गया। सर्वप्रथम रत्नसेन को मृत्यु दंड हेतु लाया गयातो वह मंसूर की भाँति प्रसन्न था। लोग उसके सौंदर्य को देखकर चंकित थे। तभी वहाँ एक भाट के वेष में षिव आए और उन्होंने गंधर्वसेन को चेतावनी दी कि यदि तुम इसे सूली दोगे तो भयंकर युद्ध छिड़ जाएगा। उन्होंने रण का घंटा बजाया और तुरंत देवों की सेना एकत्रित होने लगी। गंधर्वसेन से क्रुद्ध होने पर भगवान षिव ने उसको समझाया कि यह जोगी तोता सिंहद्वीप बुलाकर लाया है। हीरामन तोते से पूछने पर गंधर्वसेन को रत्नसेन की सत्यता का पता चल गया। उसने रत्नसेन को छोड़ दिया और पद्मावती तथा रत्नसेन के विवाह की तैयारियाँ होने लगीं।

26. रत्नसेन –पद्मावती विवाह खंड :– रत्नसेन से पद्मावती के विवाह की तैयारियाँ होने लगीं। पद्मावती बहुत प्रसन्न हुई। सारा नगर दुल्हन की तरह सजाया गया। रत्नसेन ने योगियों वाला वेष त्यागकर नयी वेषभूषा धारण की। अत्यंत

उल्लास और आनन्द के वातावरण में उनका विवाह सम्पन्न हुआ।

27. पद्मावती–रत्नसेन भेंट खंड :– पद्मावती और रत्नसेन के सोने के लिए सेज सात खंडों के ऊपर सजाई गई जो अति सुंदर व कोमल थी। अपने असीम सौन्दर्य से भरपूर पद्मावती रत्नसेन के समीप पहुँची।

28. रत्नसेन–साथी खंड :– रत्नसेन के साथी उनसे मिलने को उत्सुक थे। अतः वह उनसे मिलने के लिए गया। रत्नसेन ने अपने साथियों को भी सोलह हजार पद्मिनी नारियों के साथ और सुख के साधन प्रदान करा दिए।

29.षट्–ऋतु वर्णन खंड –पद्मावती ने अपनी सहेलियों को बुलाकर अपना तथा उनका श्रृंगार किया और सभी नव–विवाहिताएँ अपने–अपने पतियों के पास श्रृंगार किया और सभी नव–विवाहिताएँ अपने–अपने पतियों के पास श्रृंगारेच्छा से गई। छहों ऋतुओं में सभी नव–विवाहिताओं ने अपने–अपने पति के साथ सुख–भोग किया।

30.नागमती–वियोग खंड– रत्नसेन के वियोग मे तड़पती नागमती की विवषता का जायसी ने तीसवें खंड में बड़ा ही मार्मिक वर्णन किया है। उसका षरीर सूखकर काँटे जैसा हो गया था और उसके मुँह से हमेषा पी–पी की ध्वनि निकलती रहती थी । बारह–मासा वर्णन किया है कि नागमती की वर्ष के बारहों महीनों में कैसी कातर दषा रही।

31.नागमती–संदेश खंड– नागमती वियोग मे घूम–घूम कर रोती व तड़पती रही किन्तु किसी ने भी उसकी सुध नहीं ली। अंततः एक पक्षी को उस पर दया आ गई और उसने पूछा कि तुम्हें क्या दुःख है जिसके कारण तुम रात में भी सोने के स्थान पर इस प्रकार तड़पती रहती हो। नागमती ने उसे अपनी दयनीय स्थिति बताई और यह भी बताया कि रत्नसेन की माता पिता पुत्र वियोग में उसी प्रकार तड़पकर मर रही है जैसे श्रवणकुमार के वियोग में उसके माता–पिता मर गए थे। वह पक्षी नागमती के वियोग संदेष को लेकर सिंहलगढ गया। उसके विरह की आग से वहाँ की वस्तुएँ जलने लगीं। भाग्यवष रत्नसेन भी षिकार खेलता हुआ वहाँ पहुँचा और उसने वह वियोग–संदेष सुना। संदेष को सुनकर रत्नसेन का मन चितौड़ लौटने के लिए व्याकुल हो उठा। उसे उदास देखकर गंधर्वसेन ने उसकी उदासी का कारण पूछा ।

32.रत्नसेन–विदाई खंड –रत्नसेन ने गंधर्वसेन को बताया कि चितौड में उसका भाई उसके सिंहासन पर कब्जा करने की फिराक में है, अतः उसे अपने राज्य की सुरक्षा के लिए जाना होगा। गंधर्वसेन ने कहा कि वह एक राज होने के नाते इस संकट को समझ सकता है। उसने और पद्मावती ने उसे समझा–बुझाकर रोकने का प्रयास किया किन्तु रत्नसेन पर उनका कुछ भी प्रभाव न पड़ा। हारकर गंधर्वसेनने रत्नसेन को बहुत–सा धन व उपहार देकर पद्मावती को उसके साथ विदा कर दिया। उस आपार द्रव्य को दखेकर रत्नसेन गर्व से भर उठा। उसी समय समुद्र एक ब्राह्मण के वेष में उससे दान लेने आया किन्तु रत्नसेन ने लोभ के प्रभाव में आकर उसे मना कर दिया।

33.देश–यात्रा खंड – दान न मिलने के कारण समुद्र रत्नसेन से रूष्ट हो गया। रत्नसेन के जहाज अभी आधे मार्ग पर ही पहुँचे थे कि तेज समुद्री तूफान आ गया। तूफान के कारण जहाज गंभीर भँवर में डूब गए व रत्नसेन और उसके साथी तितर–बितर हो गए।

34.लक्ष्मी समुद्र खंड – समुद्र में डूबने के कारण पद्मावती बेहोष होकर बहती जा रही थी कि उसको समुद्र की पुत्री लक्ष्मी ने पकड़ लिया और सचेत कर दिया। होष आने पर पद्मावती सती होने का आग्रह करने लगी किन्तु लक्ष्मी को उस पर दया आ गई, अतः उसने पद्मावती और रत्नसेन का मिलन करा दिया। समुद्र से उपहार स्वरूप बहुत से रत्न आदि लेकर वे पुनः चितौड़ की ओर चल दिए।

35.चितौड़ आगमन खंड– रत्नसेन के चितौड़ लौटते ही हर तरफ खुषियों की बौछार होने लगी। नागमती की भी प्रसन्नता की कोई सीमा नहीं थी। रात के समय राजा नागमती के समीप गया।

36.नागमती–पद्मावती विवाद खंड – ईष्याभाव के कारण नागमती और पद्मावती में विवाद छिड़ गया। रत्नसेन ने प्रेमपूर्ण वचनों के माध्यम से दोनों को षांत किया।

37.रत्नसेन संतति खंड – इस खंड में नागमती द्वारा नागसेन को तथा पद्मावती द्वारा कँवलसेन को जन्म देने का वर्णन किया गया है।

38.राघवचेतन देश निकाला खंड :– पद्मावती के साथ उसके मायके से राघवचेतन नामक एक विद्वान आया था जो रत्नसेन के दरबार में रहता था। उसने अपने ज्योतिष ज्ञान से पूर्णिमा एक दिन पहले ही घोषित कर दी और योग–विद्या से दिखा भी दी। इस छल का पता लगने पर रत्नसेन ने उसे चितौड़ से निकाल दिया। पद्मावती ने उसे एक उपहार दिया ताकि वह कुछ अनिष्ट न करे। पर राघवचेतन दिल्ली के तत्कालीन सुल्तान अलाउद्दीन से आ मिला ।

39.राघवचेतन दिल्ली आगमन खंड :– दिल्ली जाकर राघवचेतन ने अलाउद्दीन का मन स्त्रियों के रूप की ओर आकर्षित करने का प्रयास किया। उसने सुल्तान से सिंहलद्वीप की पद्मिनी स्त्रियों के रूप की ओर आकर्षित करने का प्रयास किया। उसने सुल्तान से सिंहलद्वीप की पद्मिनी स्त्रियों के सौंदर्य की प्रषंसा की ।

40.स्त्री –विभेद वर्णन खंडः– इस खंड में राघवचेतन द्वारा सुल्तान अलाउद्दीन का पद्मिनी, चित्रणी, षंखिनी और हस्तिनी वर्गों की स्त्रियों के लक्षण सुनाए जाते हैं।

41.पद्मावती रूप–चर्चा खंडः– राघवचेतन ने अलाउद्दीन को पद्मावती का नख–षिख वर्णन सुनाया जिसे सुनते ही अलाउद्दीन बेहोष हो गया। होष में आने पर उसने पद्मावती को प्राप्त करने का निष्चय किया ओर राघवचेतन को बहुत सा पुरस्कार दिया। अलाउद्दीन ने सरजा के माध्यम से रत्नसेन को पत्र भिजवाया कि वह पद्मावती को अलाउदीन को सौंप दें।

42.बादशाह–चढ़ाई खंड :– अलाउदीन के पत्र को पढ़कर रत्नसेन अत्यधिक क्रुद्ध हुआ। जवाब में उसने सुल्तान को संदेष भिजवाया कि वह चाहे तो आक्रमण की तैयारी कर ली। दूसरी ओर रत्नसेन ने भी सेना तैयार कर ली।

43.राजा–बादशाह युद्ध खंड :– अलाउद्दीन और रत्नसेनकी सेनाएँ एक–दूसरे के सामने आ गईं और भयंकर युद्ध होने लगा। अलाउदीन ने किले का घेरा डाल दिया और दुर्ग की षरण ली। अलाउद्दीन ने किले का घेरा डाल दिया और दुर्ग की ओर तोपों के गोलों और तीरों की वर्षा की जाने लगी। भीतर स रत्नसेन की सेना ने भी इन आक्रमणों का मुँहतोड़ जवाब दिया। इस प्रकार युद्ध चलते हुए बारह वर्ष बीत गए किंतु निर्णय नहीं हुआ। सुल्तान को दिल्ली लौटने का बुलावा आने लगा।

44.राजा–बादशाह मेल खंड :– बादषाह ने युद्ध बंद करके सरजा को सन्धि करने के लिए भेजा। सरजा ने बादषाह को संधि की सूचना भिजवा दी। अलाउद्दीन ने किला देखने की इच्छा व्यक्त की और रत्नसेन ने उसको भोजन पर आमंन्नित कर लिया।

45.बादशाह –भोज खंड :– इस खंड में बादषाह के निमंन्नण –भोज के लिए बनाई गई विभिन्न प्रकार की वस्तुओं जैसे – माँस मछली, चावल, तरकारी आदि का विस्तृत वर्णन किया गया है।

46.चितौडगढ़–वर्णन खंडः– भोजन के उपरान्त बादषाह प्रातःकाल दुर्ग देखने गया तो वहाँ की समृद्ध बस्ती को देखकर विस्मित रह गया। गोरा और बादल ने रत्नसेन को समझाया कि वह बादषाह से ज्यादा हेल–मेल न बढ़ाएँ, किन्तु राजा ने उनकी बातों पर विषेष ध्यान नही दिया। भोजन करते हुए अलाउद्दीन पद्मावती का प्रतिबिम्ब देख लिया और बेहोष हो गया।

47.रत्नसेन बंध खंड :– भोजन के उपरांत रत्नसेन जब अलाउद्दीन को विदा करने के लिए दुर्ग के द्वार तक उसके साथ आया तो अलाउद्दीन ने उसे छलपूर्वक बन्दी बना लिया।

48.पद्मावती नागमती–खंड :– इस खंड मे रत्नसेन को बन्दी बना लिए जाने पर नागमती और

पद्मावती द्वारा विलाप करने का मार्मिक वर्णन किया गया है।

49.देवपाल दूती खंड :– कुंभलनेर का देवपाल नामक राजा रत्नसेन के प्रति षन्नुता का भाव रखता था। रत्नसेन के बन्दी होने का समाचार पाकर उसने कुमुदिनी नामक दूती को पद्मावती को फुसलाकर कुम्भलनेर ले आने के लिए भेजा। दूती ने पद्मावती को बताया कि वह सिंहलद्वीप की ही है और उसके पिता के पुरोहित को फुसलाकर चाहा तो उसके उद्देष्य को जानकर पद्मावती ने उसे भगा दिया।

50.बादशाह दूती खंड :– सुल्तान अलाउद्दीन ने भी एक नर्तकी को दूती के रूप मे पद्मावती के पास भेजा ताकि वह पद्मावती के पास भेजा ताकि वह पद्मावती को मानसिक तौर पर उससे विवाह के लिए तैयार करद सके। यह नर्तकी एक जोगिन के वेष में चितौड़ पहुँची और पद्मावती पर प्रभाव जमाने में सफल हो गई । किंतु जैसे ही उसका रहस्योद्घाटन हुआ, उसे भगा दिया गया।

51.पद्मावती –गोरा–बादल संवाद खंडः– रत्नसेन के बन्दी बनाए जाने से दुःखी पद्मावती उसकी मुक्ति के लिए बहुत से वीरों तथा सामन्तों से मिली। अततः गोरा और बादल ने राजा को छुड़ा लाने का वचन देते हुए पान का बीड़ा खाकर यह उत्तरदायित्व संभाल लिया।

52.गोरा–बादल युद्ध–यात्रा खंड :– बादल की माता ने बादल को युद्ध में जाने से रोकने का प्रयास किया, किन्तु उसेन अपने वीरोचित कथनों से माता को समझा–बुझा दिया। बादल का अभी विवाह हुआ ही था। उसकी पत्नी ने भी उससे नहीं जाने की जिद की, किन्तु वह भी बादल को उसके संकल्प से विचलित न कर सकी।

53.गोरा–बादल युद्ध खंड :– गोरा और बादल ने छल का जवाब छल से देने का निष्चय किया। उन्होंने सोलह सौ पालकियाँ तैयार कराकर उनमें हथियारों से लैस योद्धा बैठा दिए। एक पालकी को पद्मावती के नाम से सजाकर उसमें एक लोहार बैठा दिया गया। वे यह कहते हुए दिल्ली की ओर चल पड़े कि रानी पद्मावती दिल्ली जा रही है। दिल्ली पहुँचकर उन्होंने बंदीगृह के अधिकारी को रिष्वत देकर अपनी ओर मिला लिया और उसके माध्यम से सुल्तान को संदेष पहुँचवाया कि पद्मावती आपके पास आने पूर्व रत्नसेन से मिलकर उसे दुर्ग की चाबियाँ सौंपना चाहती है। सुल्तान से आज्ञा मिल गई। लोहर ने राजा के बन्धन काट दिए ओर रत्नसेन को लेकर बादल चितौड़ की ओर रवाना हो गया। इस योजना का रहस्य खुलने पर अलाउद्दीन की सेना ने रत्नसेन पीछा करना चाहा किन्तु बादल का चाचा गोरा अपने साथियों के साथ उसे तब तक आगे बढ़ने से रोके रहा, जब तक रत्नसेन चितौड़ नहीं पहुँच गया। अंततः गोरा वीरगति को प्राप्त हो गया।

54.बन्धन–मोक्ष, पद्मावती मिलन खंड :– रत्नसेन के छूट आने की प्रसन्नता मे पद्मावती ने बादल के कंधों की पूजा की। साथ ही उसने घोड़ों के पैरों को अपने हाथ से दबाकर कृतज्ञता और हर्ष प्रकट किया। मौका मिलने पर उसने रत्नसेन को देवपाल द्वारा दूती भेजने का समाचार सुना दिया।

55.रत्नसेन –देवपाल युद्ध खंड :– रत्नसेन को देवपाल द्वारा दूती भेजे जाने का समाचार सुनकर अत्यधिक क्रोध आया और उसने देवपाल का आक्रमण कर दिया। युद्ध में वह स्वयं बुरी तरह घायल हो गया किन्तु देवपाल उसके हाथों मारा गया। चितौड़ की ओर लौटते हुए रत्नसेन रास्ते में घायल होने के कारण बेहोष हो गया।

56.राजा रत्नसेन बैकुण्ठवास खंड :– चितौड़ पहुँचते– पहुँचते रत्नसेन का स्वर्गवास हो गया। मरते समय उसने गढ़ की रक्षा क भार बादल को सौंप दिया।

57.पद्मावती–नागमती सती खंड :– पद्मावती और नागमती दोनों ही रत्नसेन के षव के साथ सती हो गई। वे पति से स्वर्ग में जा मिली। तभी अलाउद्दीन की सेना ने दुर्ग घेर लिया। चितौड़ के सैनिकों ने युद्ध में वीरगति प्राप्त की जबकि स्त्रियों ने जौहर कर लिया। अलाउदीन के हाथ रानी पद्मावती की राख हो लगी।

निष्कर्ष

पद्मावती की कथा का उपसंहार करते हुए कवि ने इस कथा से संबंधित एक रहस्य का उद्घाटन किया है जिससे पूरी कथा एक अन्योक्ति प्रतीत होती है। इस प्रतीक कथा के अनुसार चितौड़ तन है, राजा मन है, सिंहल हृदय है, पद्मिनी बुद्धि है, सुआ गुरू है नागमती दुनिया–धंधा है, राघवचेतन षैतान है और अलाउद्दीन माया है। जो इस कथा को सुनता है वह प्रेम का गहरा अर्थ समझकर 'पार' हो जाता है। ध्यातव्य है कि कई आलोचकों ने दावा किया है कि ये पंक्तियाँ जायसी ने स्वयं नहीं लिखी थीं बल्कि बाद में किसी और कवि ने जोड़ दी हैं।

संदर्भ सूची

1. ज्तनउंद ेमतपमे
2. रामचंद्र षुक्ल – हिन्दी साहित्य का इतिहास
3. डॉ नगेन्द्र – हिन्दी साहित्य का इतिहास